International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-09-2025, Accepted: 23-10-2025, Published: 07-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 68-69

हिंदी और भारतीय ज्ञान परंपराएँ: एक ऐतिहासिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

प्रो. डॉ. देवानंदन के वी
प्राचार्य, के. पी. पी. एम. शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, मल्लपुरम, केरल, भारत

सारांश
यह आलेख विभिन्न ऐतिहासिक कालों में भारतीय ज्ञान परंपराओं के निर्माण और प्रसार में हिंदी भाषा और साहित्य की भूमिका का विश्लेषण करता है। अपभ्रंश से लेकर समकालीन साहित्य तक, हिंदी न केवल संप्रेषण का माध्यम रही है, बल्कि वह ज्ञानमीमांसा, नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों की सामाजिक–सांस्कृतिक निधि भी रही है। यह अध्ययन भारत में भाषा, साहित्य और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की परस्पर गतिशीलता की पड़ताल करता है, साथ ही हिंदी के शैक्षिक विकास, सामाजिक परिवर्तन, और सांस्कृतिक निरंतरता में योगदान को रेखांकित करता है। यह शोध ऐतिहासिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से हिंदी की भूमिका को भारतीय बौद्धिक परंपरा के संरक्षण और पुनरुद्धार में केंद्रीय सिद्ध करने का प्रयास करता है।

मूल शब्दः हिंदी साहित्य, भारतीय ज्ञान परंपराएँ, भक्ति आंदोलन, स्थानीय ज्ञान मीमांसा, सांस्कृतिक इतिहास, स्वदेशी शिक्षा, भारतेन्दु, प्रेमचंद, नई शिक्षा नीति 2020

भूमिका
भारतीय ज्ञान परंपराएँ (Indian Knowledge Systems – IKS) दर्शन, विज्ञान, कला, भाषा विज्ञान, चिकित्सा, विधि और सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवहारों की एक अंतर्विषयक परंपरा हैं, जो हजारों वर्षों में विकसित हुई हैं। यद्यपि संस्कृत को इन परंपराओं की शास्त्रीय भाषा माना गया, लेकिन हिंदी और अन्य लोकभाषाओं का योगदान अकादमिक जगत में अपेक्षाकृत कम आंका गया है। हिंदी, विशेषतः उत्तर भारत में, न केवल भक्ति आंदोलन और सामाजिक–धार्मिक सुधारों का माध्यम बनी, बल्कि राष्ट्रवादी साहित्यिक आंदोलनों का भी वाहक रही। इस प्रकार, हिंदी ने स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को सुरक्षित रखने और फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
यह लेख हिंदी भाषा और साहित्य के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विकास के उन पहलुओं पर केंद्रित है जिन्हें अक्सर अनदेखा किया गया है। हिंदी–भाषी क्षेत्र में बौद्धिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की प्रमुख घटनाएँ कौन–सी रहीं? किस प्रकार की दर्शन, नैतिकता और व्यावहारिक ज्ञान की अभिव्यक्ति हिंदी ग्रंथों में हुई? उपनिवेश काल और उसके पश्चात हिंदी किस तरह अकादमिक और राजनीतिक विमर्श में स्थान बनाती रही?

हिंदी का ऐतिहासिक विकास और साहित्यिक परंपराएँ
हिंदी और उसकी साहित्यिक परंपराओं का ऐतिहासिक विकास प्राचीन भाषाई स्रोतों से लेकर आधुनिक अभिव्यक्तियों तक की एक समृद्ध यात्रा को दर्शाता है। अपभ्रंश और प्रारंभिक प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न होकर, हिंदी धीरे–धीरे सांस्कृतिक और बौद्धिक अभिव्यक्ति का एक सजीव माध्यम बन गई। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के दौरान कबीर, तुलसीदास और सूरदास जैसे कवियों की भक्ति काव्य रचनाओं ने आध्यात्मिक और नैतिक ज्ञान को लोकसम्मत बनाया। 19वीं शताब्दी में गद्य लेखन के उदय और भारतेन्दु व प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों के नेतृत्व में हिंदी नवजागरण ने भाषा को राष्ट्रवाद, सुधार और आधुनिकता से जोड़ा। आज हिंदी साहित्य विभिन्न विधाओं और अनुशासनों में भारत की बहुलतावादी चेतना और जीवंत ज्ञान परंपराओं का प्रतिबिंब बना हुआ है।

1. अपभ्रंश से प्रारंभिक हिंदी तक
हिंदी का विकास अपभ्रंश भाषाओं से हुआ, जो स्वयं प्राकृत भाषाओं से निकली थीं, और उनका मूल संस्कृत में था। संस्कृत जहाँ यज्ञ, वेद, पुराण, दर्शन और शास्त्रीय विमर्श की प्रमुख भाषा रही, वहीं अपभ्रंश ने लोकसमाज के बीच आध्यात्मिक, नैतिक और व्यावहारिक विषयों को सरल भाषा में व्यक्त करने का माध्यम प्रदान किया। प्रारंभिक हिंदी बोलियाँ, जैसे शौरसेनी, अर्धमागधी आदि, धीरे–धीरे जनभाषा के रूप में विकसित हुईं और जैन, बौद्ध, तथा अन्य संत परंपराओं के विचारों को जनसाधारण तक पहुँचाने का कार्य किया। अनेक जैन आचार्यों ने अपभ्रंश में गूढ़ दार्शनिक और नैतिक ग्रंथों की रचना की, जिससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ।

अपभ्रंश पद
"जिणं तणं णमहं सव्वदुक्खप्पमच्चणं।"
("मैं जिनेंद्र को नमस्कार करता हूँ, जो समस्त दुःखों के नाशक हैं।")

2. भक्ति आंदोलन और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण
12वीं से 17वीं शताब्दी के बीच भक्ति आंदोलन ने भारतीय साहित्यिक इतिहास में एक गहरी और व्यापक क्रांति उत्पन्न की। इस युग में कबीर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई जैसे संतों ने हिंदी की विभिन्न बोलियोंकृअवधी, ब्रज, भोजपुरी आदिकृमें लोकभाषा में गूढ़ दार्शनिक, नैतिक और आध्यात्मिक भावनाओं को सहज रूप में प्रस्तुत किया। इन संत कवियों ने जातिगत भेदभाव, बाह्य आडंबर, पाखंड और शास्त्रीय विशिष्टता को खुली चुनौती दी और समाज के हाशिये पर खड़े व्यक्ति तक ईश्वर, भक्ति, और नैतिकता के संदेश को पहुँचाया। उन्होंने ज्ञान को मंदिरों और शास्त्रों तक सीमित न रखते हुए जन–जन की चेतना में रोपित किया।

कबीर
"माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहि,
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोहि।"
तुलसीदास (रामचरितमानस):
"धर्म ते अधिक न गवनेऊ, मोह बस होइ न उर बस ब्याधी।"

हिंदी और पारंपरिक ज्ञान क्षेत्र
हिंदी और उसकी क्षेत्रीय बोलियाँ पारंपरिक भारतीय ज्ञान जैसे आयुर्वेद, ज्योतिष, कृषि, नीति और लोकाचार के संरक्षण और प्रसार का सशक्त माध्यम रही हैं, जिससे यह ज्ञान जनसामान्य तक सहज रूप में पहुँच सका।

1. आयुर्वेद, ज्योतिष और लोकज्ञान

हिंदी में अनेक ग्रंथ आयुर्वेद, कृषि, ज्योतिष, और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में लिखे गए। पंचांग, खेती–बाड़ी के ग्रंथ, और औषधि निर्देशिकाएँ जनसामान्य के लिए लिखी गईं। मौखिक परंपराएँ भी लोकाचार और पारिस्थितिक ज्ञान से समृद्ध रहीं।

लोक कहावत

"आषाढ़ सुदी दूज, किसान का बाप न पूज।"

2. शिक्षा और पाठशाला परंपरा

मध्यकालीन भारत की पाठशालाओं और गुरुकुलों में हिंदी व उसकी बोलियाँ शिक्षण का माध्यम रहीं। अंकगणित, नीति शास्त्र, ज्योतिष, और धर्मग्रंथों की शिक्षा इन माध्यमों में दी जाती थी। उपनिवेश काल में हिंदी में पाठ्यपुस्तकों और शास्त्रीय ग्रंथों के अनुवाद ने स्वदेशी ज्ञान को औपचारिक शिक्षा में स्थान दिलाया।

नीतिशास्त्र

"विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुख्म॥"

उपनिवेश और उत्तर–उपनिवेशीय परिवर्तन

उपनिवेशवाद विदेशी सत्ता द्वारा स्थानीय संसाधनों, संस्कृति और शासन पर नियंत्रण को दर्शाता है। इसके उत्तर में, उत्तर–उपनिवेशीय परिवर्तन ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान, पहचान की खोज और औपनिवेशिक प्रभावों की समीक्षा की। यह प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद समाजों में राजनीतिक, सामाजिक और बौद्धिक बदलावों को उजागर करती है।

1. सांस्कृतिक प्रतिरोध का माध्यम: हिंदी

ब्रिटिश शासन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक पुनर्जागरण और स्वदेशी मूल्यों का प्रचार किया। साहित्य भारतीय पहचान का पुनर्निर्माण करने और प्रतिरोध का औजार बना।

भारतेन्दु

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल॥"

2. स्वतंत्रता के बाद और IKS का संस्थागत रूप

1947 के बाद हिंदी को भारत की राजभाषाओं में स्थान मिला। IKS को शिक्षा नीति में शामिल करने के प्रयास हुए। केंद्रीय हिंदी संस्थान, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थाओं ने हिंदी में स्वदेशी ज्ञान परंपराओं के पाठ्यक्रम और शोध को बढ़ावा दिया।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण: हिंदी एक जीवंत ज्ञान परंपरा

हिंदी साहित्य न केवल भारतीय सभ्यता के मूलभूत सिद्धांतोंकृधर्म, कर्म, अर्थ, मोक्षकृको प्रकट करता है, बल्कि विविध वैदिक, बौद्ध, जैन, इस्लामी, और आधुनिक मानवतावादी दृष्टिकोणों के साथ संवाद भी करता है। यह साहित्य सांस्कृतिक विमर्श को जीवंत और विकसित बनाए रखने का माध्यम है।

सूरदास

"प्रभु मोहि मुकुति ना चाहै, मोहे तो सेवा में राखो।"

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

हिंदी और IKS की एकीकृत पढ़ाई में अंग्रेजी का वर्चस्व, पठन संस्कृति में गिरावट और अंतर्विषयक दृष्टिकोण की कमी जैसे कई अवरोध हैं। फिर भी, NEP 2020, भारतीय ज्ञान परंपराओं को उच्च शिक्षा में प्रोत्साहन, और डिजिटल परियोजनाओं ने नए अवसर प्रदान किए हैं।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा और साहित्य केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं रहे, बल्कि उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को जनसामान्य तक पहुँचाने, लोकबुद्धि को संरक्षित करने और सामाजिक–सांस्कृतिक सुधारों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी ने न केवल विचार और भावों की अभिव्यक्ति दी, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आधुनिक भारत के निर्माण तक राष्ट्रीय चेतना को सशक्त किया। इसका योगदान केवल साहित्यिक या भाषिक दायरे में सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, संस्कृति और समाज को भारतीय दृष्टिकोण से समझने और प्रस्तुत करने का माध्यम भी है। अतः हिंदी को मात्र एक भाषा न मानकर एक वैचारिक आंदोलन के रूप में देखना चाहिए, जो औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, वी. (2019)। हिंदी साहित्य का इतिहास। राजकमल प्रकाशन।
2. बाहरी, ह. (2018)। "हिंदी भाषा का विकास और ज्ञान प्रसारण में इसकी भूमिका।" भारतीय भाषाओं की पत्रिका, 45(2), 78–96।
3. चंद्रा, एस. (2020)। "भक्ति आंदोलन का भारतीय ज्ञान परंपराओं में योगदान।" अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 23(4), 412–428।
4. दास, एस. के. (2017)। भारतीय साहित्य का इतिहास। साहित्य अकादमी।
5. द्विवेदी, एच. पी. (2021)। "हिंदी साहित्य और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ।" दक्षिण एशियाई समीक्षा, 42(1), 15–32।
6. गुप्ता, एम. (2019)। भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी। वाणी प्रकाशन।
7. झा, डी. एन. (2018)। "प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ : लोकभाषाओं के माध्यम से प्रसारण।" ऐतिहासिक अध्ययन समीक्षा, 29(3), 145–163।
8. कुमार, के. (2020)। "भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक ज्ञान।" शिक्षा त्रैमासिक, 56(2), 201–218।
9. मिश्रा, आर. (2017)। "परंपरागत चिकित्सा ज्ञान के संरक्षण में हिंदी की भूमिका।" पारंपरिक चिकित्सा पत्रिका, 12(4), 67–82।
10. पांडेय, एस. (2021)। "डिजिटल युग और हिंदी साहित्य : पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण।" डिजिटल मानविकी त्रैमासिक, 15(2), 112–128।
11. राय, ए. (2019)। विभाजित घर: हिंदी/हिंदवी की उत्पत्ति और विकास। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. शर्मा, आर. के. (2020)। "मध्यकालीन भारत में लोकभाषा साहित्य और ज्ञान हस्तांतरण।" मध्यकालीन अध्ययन पत्रिका, 34(1), 45–62।
13. सिंह, बी. (2018)। हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास। राधाकृष्ण प्रकाशन।
14. तिवारी, एम. (2021)। "हिंदी साहित्य और ज्ञान प्रणालियों में समकालीन चुनौतियाँ।" आधुनिक भाषा समीक्षा, 38(4), 324–341।
15. त्रिपाठी, वी. (2019)। "हिंदी साहित्य का शैक्षिक प्रभाव।" शिक्षा अध्ययन पत्रिका, 27(3), 178–195।
16. उपाध्याय, के. (2020)। "लोक ज्ञान और हिंदी साहित्य।" लोकसाहित्य अध्ययन, 31(2), 89–104।
17. वर्मा, डी. (2018)। "दर्शन और हिंदी साहित्य।" भारतीय दर्शन पत्रिका, 46(3), 267–284।
18. यादव, आर. (2021)। "डिजिटल युग में हिंदी: पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का संरक्षण।" प्रौद्योगिकी और संस्कृति अध्ययन, 25(1), 56–73।